अम्बाष्टकम्

चेटीभवन्निखिल खेटी कदम्बतरु वाटीषु नाकपटली-
कोटीर चारुतर कोटी मणीकिरण कोटीकरम्बित पदा ।
पाटीर गन्धि कुच शाटी कवित्व परिपाटी मगाधिपसुता
घोटीकुला दधिक धाटी मुदार मुख वीटी रसेन तनुताम् ॥ १॥

कूलातिगामि भय तूलावली ज्वलन कीला निज स्तुति विधौ
कोलाहल क्षपित कालामरी कुशल कीलाल पोषण नभः ।
स्थूला कुचे जलदनीला कचे कलित लीला कदम्ब विपिने
शूलायुध प्रणति शीला विभातु हृदि शैलाधिराज तनया ॥ २॥

यत्राशयो लगति तन्नागजा वसतु कुत्रापि निस्तुल शुका
सुत्राम कालमुख सत्राशन प्रकर सुत्राणकारि चरणा ।
छत्रानिला तिरय पत्राभि रामगुण मित्रामरी समवधूः
कुत्रासहन्मणि विचित्राकृतिः स्फुरित पुत्रादि दान निपुणा ॥ ३॥

द्वैपायन प्रभृति शापायुध त्रिदिव सोपान धूलि चरणा
पापापह स्वमनु जापानुलीन जन तापापनोद निपुणा ।
नीपालया सुरभि धूपालिका दुरित कूपा दुदञ्चयतु मां

रूपाभिका शिखरि भूपाल वंशमणि दीपायिता भगवती ॥ ४॥

याऽऽलीभि रात्मतनु ताली सकृत्प्रिय कपालीषु खेलति भव
व्यालीन कुल्यसित चूली भरा चरण धूली लसन्मुनिवरा ।
बालीभृति श्रवसि तालीदलं वहति यालीक शोभि तिलका
साऽऽली करोतु मम काली मनः स्वपद नालीक सेवन विधौ ॥ ५॥

न्यङ्काकरे वपुषि कङ्काल रक्तपुषि कङ्कादि पक्षि विषये
त्वं कामनामयसि किं कारणं हृदय पङ्कारिमेहि गिरिजाम् ।
शङ्का शिला निशित टङ्कायमान पद सङ्काशमान सुमनो-
झङ्कारिमान ततिमङ्कानुपेत शशि सङ्काशि वक्त्र कमलाम् ॥ ६॥

कम्बावती समविडुम्बा गलेन नव तुम्बाभवीण सविधा
शं बाहुलेय शशि बिम्बाभिराम मुख सम्बाधित स्तनभरा ।
अम्बा कुरङ्गमद जम्बाल रोचिरिह लम्बालका दिशतु मे
बिम्बाधरा विनत शम्बायुधादि निकुरुम्बा कदम्ब विपिने ॥ ७॥

इन्धानकी रमणि बन्धा भवे हृदय बन्धावतीव रसिका
सन्धावती भुवन सन्धारणे ऽप्यमृत सिन्धावुदार निलया ।
गन्धानुभान मुहु रन्धालिवीत कचबन्धा समर्पयतु मे

शं धाम भानुमपि सन्धान माशु पद सन्धान मप्यगसुता ॥ ८॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित मम्बाष्टकं सम्पूर्णम् ॥